"माध्यमिक स्तरीय बालक-बालिकाओ की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
एम0एड0 उपाधि की आंशिक अभिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु-शोध प्रबन्ध

2008-2009

निर्देशक
डॉ0 पी0एस0 सेंगर
रीडर और प्रवक्ता

शोधकर्ता
राघवेन्द्र सिंह
एम0एड0 (छात्र)

शिक्षा संस्थान
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज
अतर्रा, बाँदा (उ0प्र0)

Scanned with CamScanner

घोषणा-पत्र

मैं राघवेन्द्र सिंह घोषणा करता हूँ कि "माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन" नामक प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध मैने डॉ0 प्रताप सिंह सेंगर (रीडर, शिक्षा विभाग) अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा (बाँदा) के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में सम्पादित किया है। यह मेरा मौलिक शोधकार्य है।

दिनांक

स्थान– अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

अतर्रा, बाँदा (उ0प्र0)

शोधार्थी

राघवेन्द्र सिंह

(राघवेन्द्र सिंह)

एम0एड0 (छात्र)

Scanned with CamScanner

प्राक्कथन

माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन नामक प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को शोधकर्ता ने निम्नलिखित पांच अध्यायों में समाहित किया है।

प्रथम अध्याय में समस्या की प्रस्तावना अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन की परिकल्पना, प्रयुक्त महत्वपूर्ण तकनीकी शब्दों की परिभाषा, अध्ययन का परिसीमन को सम्मिलित किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत भारत एवं विदेशों में सम्पन्न हुए सम्बन्धित शोध कार्यो का सर्वेक्षण करने, पूर्व में हुए शोध कार्यो की समीक्षा द्वारा अध्ययन की नवीनता एवं औचित्य को स्पष्ट करने, पूर्व में हुए शोध कार्यो से प्रस्तुत शोध कार्य की विचलनता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध अध्ययन की विधि, जनसंख्या एवं न्यादर्श, प्रयुक्त शोध उपकरणों की व्याख्या एवं सांख्यिकीय प्रविधियों को सम्मिलित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण को स्थान दिया गया है।

पंचम एवं अन्तिम अध्याय में परिकल्पनावाद, शोध निष्कर्षो एवं उनकी व्याख्या, निष्कर्षो की उपादेयता, भावी अनुसन्धान हेतु सुझाव को सम्मिलित किया गया है।

Scanned with CamScanner

आभारोक्ति

प्रस्तुत शोध अध्ययन गुरूजनों के प्रेम, प्रेरणा एवं मार्गदर्शन तथा मित्रों एवं पारिवारिकजनों के अपेक्षित सहयोग से ही सम्पन्न हो पाया है, अतः शोधकर्ता सभी के प्रति आभार प्रकट करना अपना मूल कर्तव्य समझता है।

सर्वप्रथम शोधकर्ता परम् पूज्यनीय डॉ0 प्रताप सिंह सेंगर (रीडर, शिक्षक शिक्षा विभाग) के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है, जिनके कुशल मार्गदर्शन में यह लघु–शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका। शोधकर्ता आदरणीया डॉ0 (श्रीमती) ऊषा कक्कड़ (विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग) एवं शिक्षक शिक्षा विभाग के सभी सम्मानित गुरूजनों के स्नेह एवं सहयोग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है, जिन्होंने समय–समय पर शोधकर्ता को प्रोत्साहित करते हुए लघु–शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में सहयोग किया।

लघु–शोध प्रबन्ध के लिए जिन माध्यमिक विद्यालयों से प्रदत्तों का एकत्रीकरण किया गया है उनके प्रधानाध्यापकों तथा अन्य अध्यापकों के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिनके सराहनीय सहयोग से यह कार्य पूर्ण हुआ।

अन्ततः पारिवारिक सदस्यों एवं मित्रों के द्वारा किया गया सराहनीय सहयोग मेरे लिए सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

दिनांक

शोधार्थी

राघवेन्द्र सिंह.

(राघवेन्द्र सिंह)

एम0एड0 (छात्र)

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अध्याय		पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय : समस्या एवं उसकी पृष्ठ भूमि		1–9
1.1	प्रस्तावना	
1.2	अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व	
1.3	समस्या कथन	
1.4	अध्ययन के उद्देश्य	
1.5	अध्ययन की परिकल्पना	
1.6	प्रयुक्त महत्वपूर्ण तकनीकी शब्दों की परिभाषा	
1.7	अध्ययन का परिसीमन	
द्वितीय अध्यायः– सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन		10–21
2.1	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का अर्थ	
2.2	सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन	
2.3	शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन	
2.4	सम्बन्धित शोध अध्ययनों की समीक्षा	
2.5	पूर्व में सम्पन्न शोधों से वर्तमान शोध का विचलन	
तृतीय अध्यायः– अध्ययन का शोध प्रारूप		22–31
3.1	अध्ययन की शोध विधि	
3.2	जनसंख्या	

Scanned with CamScanner

3.3 न्यादर्शन एवं न्यादर्श

3.4 प्रयुक्त शोध उपकरणों का विवरण

3.5 सामाजिक समायोजन प्रश्नावली

3.6 सांख्यिकीय प्रविधियां

चतुर्थ अध्याय : ऑकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकीय विश्लेषण 32–37

4.1 पस्तावना

4.2 प्रथम परिकल्पना का परीक्षण

4.3 द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण

4.4 तृतीय परिकल्पना का परीक्षण

4.5 चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण

4.6 पंचम परिकल्पना का परीक्षण

पंचम अध्याय :– निष्कर्ष, व्याख्या, उपादेयता एवं सुझाव 38–44

5.1 शोध निष्कर्ष

5.2 प्राप्त निष्कर्षो की व्याख्या

5.3 निष्कर्षो की उपादेयता

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

परिशिष्ट 45–65

(क) शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के ऑकड़े

(ख) सामाजिक समायोजन मापनी

(ग) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Scanned with CamScanner

प्रथम अध्याय

Scanned with CamScanner

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

1.5 अध्ययन की परिकल्पना

1.6 प्रयुक्त महत्वपूर्ण तकनीकी शब्दों की परिभाषा

1.7 अध्ययन का परिसीमन

Scanned with CamScanner

1.1 प्रस्तावना :-

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना होता है। इस विकास के द्वारा व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ होता है, जिससे वह प्रत्येक परिस्थिति में उचित प्रकार से समायोजन कर सकता है।

शिक्षा मानवीय चेतना का वह ज्योर्तिमय एवं सुसंस्कृत पक्ष है, जिसके द्वारा मानव का पूर्ण विकास होता है। वह व्यक्ति को समाज में रहने योग्य बनाती है और शिक्षा द्वारा ही समस्त ज्ञान, कला, कौशलों और योग्यताओ में वृद्धि होती है। शिक्षा को प्रकाश का श्रोत माना गया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे हमारा पथ प्रदर्शन करती है।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो समाज के दुर्गुणो का बहिष्कार करती है तथा गुणें का निर्माण करती है। जब समाज के स्वीकृत मानदण्डों से विपठन के मिशाल देखने को मिलते है तब भावनाओ एवं विवेकशीलता को जगाकर सामाजिक नियंत्रण की बात सोंची जाती है। शिक्षा उत्तम नागरिकों का निर्माण करती है उत्तम नागरिक उत्तम राज्य का आधार है। शिक्षा को जाति, पांति, धर्म से अलग रखकर सभी सम्प्रदायों को एक दृष्टि से निर्देशित करना चाहिए जिससे समाज का हर वर्ग योग्य हो।

प्रजातंत्रात्मक देशों में शिक्षा किसी व्यक्ति का विशेषाधिकार नहीं है। शिक्षा सभी व्यक्तियों का जन्म सिद्ध अधिकार है, इसलिए ऐसे देशों में शिक्षा को सर्व सुलभ बनाया जा रहा है। स्त्री, पुरूष, शिशु, बालक, प्रौढ़ सभी को शिक्षा प्रदान की जा रही है। सामान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त असामान्य तथा प्रतिगामी एवं प्रतिभाशाली बालकों के लिए शिक्षा का प्रबन्ध किया जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार शिक्षा से लाभ उठाने का प्रयत्न करता है। बालक में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। बौद्धिक,

Scanned with CamScanner

शारीरिक तथा भावनात्मक दृष्टि से प्रत्येक बालक एक दूसरे से भिन्न होता है। जो बालक इन दृष्टियो से जितना ही पूर्ण होता है उसकी शक्ति शिक्षा प्राप्त करने की उतनी ही अधिक होती है। शैक्षिक उपलब्धि में श्रेष्ठता प्रवीणता तथा सरलता हेतु उस विषय में विद्यार्थी की शैक्षिक रूचि का पर्याप्त मात्रा में होना आवश्यक है। किसी विशेष विषय के प्रति जो रूचि विद्यार्थी में निहित होती है उसे शैक्षिक रूचि कहते है। जिस विषय में विद्यार्थी की रूचि विद्यमान रहती है उसमें उसको अधिक सफलता मिल सकती है

शिक्षित या विकसित व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह एक श्रेष्ठ नागरिक तथा एक सामाजिक व्यक्ति हो। एक सामाजिक व्यक्ति वह होता है, जो समाज के मापदण्डो पर खरा उतरता है। एक सामाजिक व्यक्ति सामाजिक विकास के तीन दृष्टिकोंणों को पूरा करता है, उसको उचित प्रकार से व्यवहार करना चाहिए, समाज के द्वारा दिये हुए कर्तव्यों को अच्छी प्रकार निर्वहन करना चाहिए अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह आवश्क है कि वह जीवन पर्यनत विभिन्न अनुकूल एव प्रतिकूल परिस्थितियों से निरंतर सामजस्य स्थापित करते हुए जीवन यापन करें, क्योकि व्यक्ति के लिए यह निश्चित नहीं है कि वह पूरे जीवन एक ही स्थान पर रहेगा इसलिए वह जहां–जहां जाता है उसको वातावरण तथा समाज के साथ अपने को समायोजित करना ही पड़ता है। व्यक्ति के जीवन में घटने वाली यह घटना समायोजन कहलाती है।

Colemann :- "Adjustment is the out come at indivdul efforts to deal with listress and met his needs."

कोलमैन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति तथा कठिनाइयों के परिणाम को ही समायोजन मानते है।[1]

1 कोलमैन द्वारा उद्धत अरूण कुमार सिह 2007 उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान दिल्ली नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसी दास बंगला रोड पृष्ठ संख्या 316

Scanned with CamScanner

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक सम्पादित करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि व्यक्ति उस कार्य में पूर्णतः संलग्न हो। संलग्नता के लिए अन्य बातों के साथ–साथ कार्य के प्रति रूचि का होना भी आवश्यक है, रूचि के अभाव में व्यक्ति उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकता है। शिक्षा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। अतः यह आवश्यक है कि बालक की शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न हो जिससे वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सके। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का विकास इस प्रकार करना है कि वह उचित समायोजन कर सके। **डी0बी0 महोदय के अनुसार,** "शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक कुशलता सिखाना है।" उचित सामाजिक कुशलता का विकास उचित सामाजिक समायोजन से ही सम्भव है। प्रायः यह देखा गया है कि शिक्षा से समायोजन प्रभावित होता है और शिक्षा जाति एवं अन्य कारणों से प्रभावित होती है अतः शोधार्थी ने यह आवश्यकता महसूस की कि जाति एवं शैक्षिक उपलब्धि के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाये। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं सुझाव माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का उनके समायोजन से क्या सम्बन्ध है, ज्ञात करने में सहायक होंगें तथा सामाजिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का निवारण करने में सहायक सिद्ध होगें।

1.3 समस्या कथन :–

"माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन"

Scanned with CamScanner

1.4 अध्ययन के उद्देश्य :-

शोध एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यो का नियोजन किया जाता है जिनका अपना विशिष्ट उद्देश्य होता है। विद्वानो का मत है कि व्यक्ति का किसी कार्य को करने का उद्देश्य जितना अधिक प्रबल होगा, उतना ही अधिक उसमें उसकार्य को करने की तत्परता होती है। अर्थात किसी कार्य को करने से पूर्व यदि उसके उद्देश्य निर्धारित कर लिए जाते है तो कार्य के प्रति तत्परता बढ़ जाती है और व्यक्ति कार्य को शीघ्र व उचित विधि से अपेक्षित समय मे सम्पादित कर लेता है। अतः किसी भी कार्य को करने से पूर्व उद्देश्य का निर्धारण करना आवश्यक होता है।

शोध उद्देश्यों का लक्ष्य चरों के मध्य कार्यात्मक सहसम्बन्ध का विवरण या व्याख्या तथा विश्लेषण और अपेक्षित परिणाम को इंगित करना होता है। अतः शोधकर्ता ने अध्ययन को दिशा देने हेतु कुछ उद्देश्यों का निर्धारण किया है जो निम्नलिखित है:-

1. माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समयोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तरीय नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समयोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तरीय बालकों की शौक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बनध का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

1.5 परिकल्पना :–

परिकल्पना का तात्पर्य पूर्ण चिन्तन से है। यह अनुसन्धान की प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के बाद उसमें कारणों तथा कार्य कारण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया जाता है अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है आदि निश्चय करने के बाद उसका परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है।

परिकल्पना किसी भी अनुसंधान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। किसी नवीन तथ्य की खोज वैज्ञानिक विधि से करने के लिए आवश्यक है कि सबसे पहले अपने ज्ञान, सूचना तथा अनुभव के आधार पर एक सम्भावित कार्य–कारण स्थित कर लिया जाये और विषय से सम्बन्धित उचित सामग्री एकत्रित करके उसकी परीक्षा की जाये। शोधकर्ता की परिकल्पना पूर्णरूप से निराधार हो सकती है, किन्तु प्रत्येक दशा में उसके द्वारा अनुसंधान कार्य में आगे बढ़ने में अवश्य सहायता मिलती है। प्रस्तुत शोध–अध्ययन की निम्नांकित परिकल्पनायें निश्चित की गई है।

1. माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
2. माध्यमिक स्तरीय नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
3. माध्यमिक स्तरीय बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनत्मक सहसम्बन्ध है।
4. माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

Scanned with CamScanner

5. माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

1.6 प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का अर्थ एवं परिभाषा :–

किसी भी शोध कार्य में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण एक महत्वपूर्ण कदम होता है। इस परिभाषीकरण का उद्देश्य लघुशोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों को लेकर संभावित अस्पष्टता को दूर करना है। प्रस्तुत लघुशोध में प्रयुक्त प्रमुख तकनीकी शब्दों तथा उनका परिभाषीकरण निम्नवत् हैः–

सामाजिक समायोजनः–

प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह एक श्रेष्ठ नागरिक व सामाजिक प्राणी हो। अतः सामाजिक समायोजन के द्वारा व्यक्ति एक श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी के उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर सकता है।

स्मिथ के अनुसार :–

"यथार्थ पर आधारित एवं संतोष देने वाला कार्य करने वाला व्यक्ति ही समायोजित व्यक्ति हो सकता है।"

कोलमैन के अनुसार :–

"व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा सामाजिक कठिनाइयों के निराकरण के प्रयासो के परिणाम को ही सामाजिक समायोजन करते है।"

बोरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड :–

"समायोजन वह प्रक्रिय है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।"

Scanned with CamScanner

1.7 परिसीमायें :–

प्रत्येक अध्ययन अपने आप में पूर्ण नहीं होता है व्यवहारिकता के धरातल पर यह कुछ सीमाओं में बंधा रहता है। परिसीमायें अध्ययन की परिधि होती है। प्रस्तुत लघु–शोध अध्ययन की भी कुछ परिसीमायें निम्न प्रकार है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन बांदा जिले तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन एक छोटे न्यादर्श पर किया गया है।

Scanned with CamScanner

द्वितीय अध्याय

Scanned with CamScanner

2.1 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का अर्थ

2.2 सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन

2.3 शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन

2.4 सम्बन्धित शोध अध्ययनों की समीक्षा

2.5 पूर्व में सम्पन्न शोधों से वर्तमान शोध का विचलन

Scanned with CamScanner

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :-

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान के अन्तर्गत सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण अत्यन्त आवश्यक अंग होता है। सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण या पुनरावलोकन भौतिक विज्ञान या सामाजिक विज्ञान के सभी क्षेत्रो में अनिवार्य रूप से किया जाता है। बिना साहित्य का अवलोकन किये मानव विज्ञान के विषयों में शोधकार्य सम्पादित नहीं किये जा सकते है। शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विषयों के क्षेत्रीय अध्ययनों पुस्ताकालयों एवं लेखों पर आधारित अध्ययनो मे सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण रीढ़ सदृश्य है। ऐतिहासिक शोध तो साहित्य के पुनरावलोकन पर ही आधारित होते है अतः अनुसंधान का प्रथमिक आधार समस्या से सम्बन्धित साहित्य का पुरावलोकन ही होता है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किये बिना उच्च स्तर का शोधकार्य सम्पादित नहीं किया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य का तात्पर्य :-

सम्बन्धित साहित्य के अन्तर्गत शोध समस्या से सम्बन्धित सब प्रकार की पुस्तकें, ज्ञानकोष, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्ध वं अभिलेख आदि आते है अर्थात प्राथमिक श्रोत के अन्तर्गत ऐतिहासिक अनुसंधानों में ताम्र पत्र पर लिखे लेख, शिलालेख, राज दरबारो के लेख आदि के अतिरिक्त क्षेत्रीय अध्ययनों में शोधकर्ता का मूल प्रतिवेदन सम्मिलित है। द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत सामाजिक प्रकाशन, ज्ञानकोष, शैक्षिक वार्षिकी, शिक्षा सम्बन्धी सूची, शिक्षा तथा मनोविज्ञान लेखसार, ग्रन्थ सूची तथा निर्देशिका में शब्द कोष, अनुसंधान से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं पत्रिकाएं आदि सम्मिलित की जाती है।

Scanned with CamScanner

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का तात्पर्य :–

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों, समाचारो आदि से है जिनके माध्यम से शोधकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने, में कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। पुस्तकालय एवं अन्य साधनों से प्राप्त समस्या से सम्बन्धित लिखित साहित्य को पढ़ना, निरीक्षण करना तथा उनका मूल्यांकन करना सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण है।

समस्या से सम्बन्धित अध्ययन :–

समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन।

1. पाण्डेय (1993) ने अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत अंर्तमुखी–बर्हिमुखी किशोर छात्र–छत्राओं की सामाजिक समायोजन की समस्याओं के अध्ययन पर शोधकार्य किया।[1]

उद्देश्य :–

1. अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत किशोर छात्र–छत्राओं की सामाजिक समायोजन समस्या का अध्ययन करना।
2. हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत किशोर छात्र–छात्राओं की सामाजिक समयोजन की समस्या का अध्ययन करना।

---

1. साधना पाण्डेय (1993) "अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत अर्न्तमुखी–बर्हिमुखी किशोर छात्र–छात्राओं की सामाजिक समायोजन की समस्याओं का अध्ययन" पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) कानपुर सी0एस0जे0एम0यू0

Scanned with CamScanner

प्रक्रिया :–

प्रस्तुत शोधकार्य में एक्स पोस्ट फैक्टों अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। अनुसंधान हेतु प्रथम चरण में कानपुर शहर के समस्त हिन्दी/अंग्रेजी माध्यम के इण्टरमीडिएट विद्यालयों से लाटरी विधि द्वारा आठ विद्यालयों का चयन करने के बाद उनसे यादृच्छिक आधार पर 1000 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

परिणाम :–

1. छात्रों की पारिवारिक समायोजन समस्यायें छात्राओं की तुलना में सार्थक रूप से अधिक थी।
2. हिन्दी माध्यम के अध्ययनरत विद्यार्थियों की पारिवारिक समायोजन समस्यायें अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक थी।

शर्मा (1994), ने "विकलांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का उनकी वुद्धि के परिप्रेक्ष्य में एक तुलनात्मक अध्ययन" किया।[1]

उद्देश्य :–

उच्च बुद्धि, औसत बुद्धि, एवं निम्न बुद्धि के विकलांग छात्र एवं छात्राओं के समायोजन अन्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रक्रिया :–

अध्ययन हेतु आगरा शहर के दो विद्यालय सरकुती रूनकता आगरा एवं राजकीय मूल बहार विद्यालय विजय नगर आगरा को चुना गया। कुल 120 छात्र–छत्राओं को

---

1. पूनम शर्मा (1994) "विकलांग छात्रएवं छात्राओं के समायोजन का उनकी बुद्धि के परिप्रेक्ष्य में एक तुलनात्मक अध्ययन" पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) आगराः डा0 बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

Scanned with CamScanner

न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। अध्ययन हेतु समायोजन सूची डा० ए०के०पी० सिन्हा आर०पी० सिंह द्वारा निर्मित एवं सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण डा० एस० जलोटा का चयन किया गया।

परिणाम :–

1. उच्च बुद्धि, औसत बुद्धि के विकलांग छात्राओं के भावनात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन में कोई अन्तर नहीं था।
2. औसत बुद्धि के विकलांग छात्राओं एवं औसत बुद्धि के विकलांग छात्रों के समायोजन में कोई अन्तर नहीं था।
3. निम्न बुद्धि छात्राओं व निम्न बुद्धि छात्रों में समायोजन में कोई अन्तर नहीं था।

चौहान (1996) ने "बच्चों का मातृत्व भूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण और उसका समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन" पर शोधकार्य किया।[1]

उद्देश्य :–

1. किशोर बालक एवं बालिकाओं में समायोजन।
2. किशोर बालकों में समायोजन का अध्ययन।
3. किशोर बालिकाओं में समायोजन का अध्ययन।
4. किशोर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन में अन्तर।

परिणामः–

1. कक्षा 9 की अपेक्षा कक्षा 11 के किशोर बालक एवं बालिकाओं का समायोजन अति उत्तम है। कक्षा 11 के किशोर बालक एवं बालिकायें गृह समायोजन से पर्याप्त

1. सुमनलता चौहान (1996) "बच्चों का मातृत्व भूमिका के प्रति प्रत्यक्षीकरण और उसका समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन" पी०एच०डी० (शिक्षाशास्त्र) कानपुर सी०एस०जे०एम०यू०

Scanned with CamScanner

सम्बन्ध बनाये रखते है। कक्षा बढ़ने के साथ–साथ बुद्धि विकसित होती जाती है, जिससे किशोर बालक एवं बालिकाएं अच्छा सामंजस्य बनाये रखते है।

सिंह (2000) ने "किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन में उनके आत्मविश्वास की भूमिका" पर अध्ययन किया।[1]

उद्देश्य :–

1. किशोर छात्रों के पारिवारिक समायोजन में उनके निम्न आत्मविश्वास की भूमिका ज्ञात करना।
2. किशोर छात्र–छात्राओं की पारिवारिक समायोजन में उनके उच्च आत्मविश्वास की भूमिका ज्ञात करना।

प्रक्रिया :–

छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर में मापन के लिए निम्न परीक्षण प्रस्तुत किया गया। युवक समस्या सूची (Y.P.I.) डा0 एम0 वर्मा, ए0डी0एम0एम0 महाविद्यालय कानपुर।

परिणाम :–

1. समायोजन के सभी प्रमुख क्षेत्रों परिवार, विद्यालय समाज एवं संवेग में आत्म विश्वास की सार्थक भूमिका परिलक्षित हुई। केवल उच्च आत्म विश्वास स्तर पर छात्राओं की संवेगता समायोजन अपेक्षाकृत निम्न रहा।
2. समायोजन के सभी क्षेत्रों में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की स्थिति कुछ दुर्बल परिलक्षित होती है।

---

1. अंकुर सिंह (2000) "किशोर छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन में उनके आत्मविश्वास की भूमिका" पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) कानपुर सी0एस0जे0एम0यू0

Scanned with CamScanner

सिंह (2003) ने "शिक्षक और शिक्षिकाओं में तनाव उनके व्यक्तित्व आवश्यकता और समायोजन के सम्बन्ध का अध्ययन" किया।[2]

उद्देश्य :–

1. शिक्षक और शिक्षिकाओं में तनाव और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शिक्षक और शिक्षिकाओं के तनाव और समायोजन में सम्बन्ध ज्ञात करना।

परिणाम :–

1. शिक्षकों और शिक्षिकाओं में समान तनाव पाया गया।
2. शिक्षकों में तनाव और समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

ज्योसत्ना, सतीश एवं जावेद (2004) ने "किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन पर तंत्रिका एवं उमागम का प्रभाव जानने के लिए शोध किया।1

उद्देश्यः–

1. किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन पर तिन्त्रका के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. किशोर–छात्राओं के समयोजन पर तन्त्रिका के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिणाम :–

1. किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन पर तंत्रिका का प्रभाव पड़ता है तथा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का समायोजन कम पाया गया।
2. किशोर छात्र–छात्राओं के समायोजन पर उपागम में उपस्थिति अनेक चरों का प्रभाव पड़ता है तथा इसमें भी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का समायोजन कम पाया गया।

विदेशों में समायोजन से सम्बन्धित अध्ययन :–

1. कुल्गिनी, बार्बर एण्ड बोनी (2001) ने समूह अनुस्थापना तथा समायोजन पर

2. एच0 सिंह (2003) "शिक्षक और शिक्षिकाओं में तनाव उनके व्यक्तित्व आवश्यकता और समायोजन के सम्बन्ध का अध्ययन" पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) नई दिल्ली एन0सी0ई0आर0टी0

1. ज्योत्सना, सतीश एवं जावेद (2004) "किशोर छात्र–छात्राओं के समयोजन पर तंत्रिका एवं उपागम का प्रभाव" पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) दिल्ली विश्वविद्यालय।

Scanned with CamScanner

शोध के लिए हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया व उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि समूह अनुस्थापना व समायोजन परस्पर सार्थक रूप से सम्बन्धित है और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समायोजन से प्रभावित होती है।[1]

2. हार्टस, जेसिका व थामस (2002) ने किशोरों के समायोजन तथा उनके अभिभावकों के मध्य सम्बन्धों पर शोध किया व निष्कर्ष निकाला कि किशोरों का समायोजन उनके तथ अभिभावकों के मध्य होने वाले सम्बन्धों व व्यवहार पर पूर्णतया निर्भर करता है।[2]

3. गारबर, जूडी तथा स्टेफनी (2004) ने किशोरों के समायोजन तथा उनकी भावनात्मक स्वायत्तता के सन्दर्भ में अध्ययन किया व उन्होंने अध्ययन में पाया उच्च भावनात्मक स्वयत्तता वाले किशोरों में समायोजन सम्बन्धी समस्यायें निम्न भावनात्मकता वाले किशोरों की अपेक्षा अधिक थी।[3]

4. क्लेमेण्ठ, पेगी व रीड (2005) ने सोवियत किशोरों व इजरायली किशोरों पर भाषा के माध्यम का उसकी उपलब्धि एवं समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया एवं पाया कि सोवियत विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के प्रति उपलब्धि व समायोजन स्तर इजराइली विद्यार्थियों की अपेक्षा भिन्न था।[4]

---

1. फाल्गुनी, बार्बर एवं बोनी (2001), "अर्ली एडोलसेन्स पीपर ओरिएन्टेशन एण्ड एडजेस्टमेन्ट ड्यूरिंग हाईस्कूल"
2. हार्टस, जेसिका व थामस (2002), "एडजस्टमेन्ट आफ एडोलसेन्स विटवीन पैरेन्टस रिलेशनसिप"
3. गारबर, जूडी तथा स्टेफनी (2004), "इफेक्ट ऑफ मीडियम ऑफ इजराइली एण्ड सोवियत एडोलसेन्स ऑन एचीवमेन्ट एण्ड एडजस्टमेंट"
4. क्लेमेन्ट, पेगी व रीड (2005) "इफेक्ट आफ मीडियम आफ इजराइली एण्ड सोवियत एडोलसेन्स आन एचीवमेन्ट एण्ड एडजस्टमेन्ट"

Scanned with CamScanner

शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन :–

शर्मा (2002) ने "उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि, शैक्षिक रूचि, आकांक्षा स्तर एवं पारिवारिक सम्बन्धों से शैक्षिक उपलब्धि का समन्वय एक तुलनात्मक अध्ययन" पर शोध कार्य किया।

उद्देश्यः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं के पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिणाम :–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों का पारिवारिक सम्बन्ध निम्न स्तर का पाया गया।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं का पारिवारिक सम्बन्ध उच्च स्तर का पाया गया।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राओं का पारिवारिक सम्बन्ध एवं छात्रों के पारिवारिक सम्बन्ध में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

त्रिपाठी (2005), ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।[1]

अरविन्द शर्मा (2002), "उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की बुद्धिलब्धि शैक्षिक रूचि, आंकाक्षा स्तर एवं पारिवारिक सम्बन्धों से शैक्षिक उपलब्धि का समन्वय : एक तुलनात्मक अध्ययन" पी0एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) कानपुर सी0एस0जे0एम0यू0

Scanned with CamScanner

परिणामः–

शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि उनकी उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

विदेशों में शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन :–

फ्लोर्स, स्पोनियर मेन व आर्मस्ट्रंग (2006) ने अमेरिकी हाईस्कूल विद्यार्थियों पर एक शोध किया जिससे उन्होंने विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा उनकी योग्यता की वैधता जानने का प्रयास किया। जिससे यह पाया गया है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि तथा उनकी योग्यता परस्पर महत्तम रूप से सम्बन्धित है।[1]

लेविनसन, एडवर्ड व ओहलर (2006), ने लैटिन हाईस्कूल में छात्र–छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि जानने हेतु एक शोध अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि छात्रों में शैक्षिक रूचि छात्राओं की अपेक्षा कहीं अधिक स्तर पर पायी गयी।[2]

शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन से सम्बन्धित अध्ययनों की समीक्षा :–

पाण्डेय (1993), ने अपने अध्ययन में पाया कि हिन्दी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन समस्यायें अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक पायी गयी। शर्मा (1994), ने अपने अध्ययन में पाया कि निम्नबुद्धि छात्राओं तथा निम्नबुद्धि छात्रों के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है। चौहान (1996) ने

---

1. फ्लोर्स, स्पोनियर मैन व आर्मस्ट्रांग (2006), "वैलिडिटी ऑफ स्ट्रांग इन्ट्रेस्ट एण्ड स्मिथ कान्किडेन्स"
2. लेविनसन एडवर्ड व ओहलर (2006), "वैलिडिटी ऑफ स्ट्रांग इन्ट्रेस्ट विथ द सॅम्पल आफ डिफरेन्ट मीडियम"

Scanned with CamScanner

अपने अध्ययन में पाया कि कक्षा 9 तथा कक्षा 11 के छात्र तथा छात्राओं का समायोजन निम्न रहा। फाल्गुनी, बार्बर एण्ड बोनी (2001), ने अपने अध्ययन में पाया कि समूह अनुस्थापन तथ समायोजन परस्पर सार्थक रूप से सम्बन्धित है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समायोजन से प्रभावित होती है।

हार्टस, जेसिका व थॉमस (2002) ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों का समायोजन उनके तथा अभिभावकों के मध्य होने वाले सम्बन्धों व व्यवहार पर पूर्णतया निर्भर करता है। चौहान (1997) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च वुद्धि की स्नातक प्रथम वर्ष की छात्राओं की शैक्षिक रूचि निम्न बुद्धि की छात्राओं की शैक्षिक रूचि से अधिक पायी गयी। श्रीवास्तव (1998) ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों की शैक्षिक रूचि प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक आर्थिक स्तर से प्रभावित रहती है। शर्मा (2002), ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। फ्लोर्स, स्पोनियर व आर्मस्ट्रांग (2006) ने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षिक रूचि तथा उनकी योग्यता परस्पर महत्तम रूप से सम्बन्धित होती है।

उपर्युक्त साहित्यों के गहन विश्लेषण के पश्चात निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों पर कार्य किया गया है तथा शैक्षिक उपलब्धि पर उच्च स्तर व उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं का अध्ययन किया गया है। सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तरीय बालक बालिकाओं की जाति एवं शैक्षिक उपलब्धि का समायोजन से सहसम्बन्ध का अध्ययन पर कार्य नहीं किया है।

अतः इस समस्या पर कार्य करना औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

Scanned with CamScanner

तृतीय अध्याय

Scanned with CamScanner

3.1 अध्ययन की शोध विधि

3.2 जनसंख्या

3.3. न्यादर्शन एवं न्यादर्श

3.4 प्रयुक्त शोध उपकरणों का विवरण

3.5 सामाजिक समायोजन मापनी

3.6 सांख्यिकीय प्रविधियां

Scanned with CamScanner

किसी भी कार्य को करने के लिए किसी प्रक्रिया की विधि का प्रयोग करना पड़ता है तभी कार्य विधिवत रूप से सम्पन्न होता है। इसी प्रकार शोध कार्य सत्य के खोज की एक प्रक्रिया है। अतः लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। अतः अनुसंधान के संसाधनों में विधियों को ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि तथा प्रयोगात्मक विधि आदि नामों से जानते है। प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है।

अनुसंधान की विधियों का वर्गीकरण विद्वानों ने अनेक प्रकार से किया है। किसी ने क्षेत्र के अनुसार वर्गीकरण करते हुए शिक्षा सम्बन्धी, मनोविज्ञान सम्बन्धी तथा इतिहास सम्बन्धी अनुसंधान के रूप में वर्गीकरण किया है तो किसी ने उसके उद्देश्य अथवा ऑकड़े प्राप्त करने की विधि के आधार पर वर्गीकरण किया है।

सामान्य रूप से शोध कार्य में तीन विधियों का प्रयोग किया जाता है :–

1. ऐतिहासिक विधि
2. वर्णनात्मक य सर्वेक्षण विधि
3. प्रयोगात्मक विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है अतः इस विधि का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:–

सर्वेक्षण विधिः–

सर्वेक्षण का सामान्य अर्थ देखना होता है। परन्तु वैज्ञानिक अनुसंधान में इसका प्रयोग विशिष्ट अर्थो में किया जाता है।

Scanned with CamScanner

सर्वेक्षण से तात्पर्य ऐसे अध्ययनों से है जिसमें कि शोधार्थी किसी विशेष स्थान पर जाकर कुछ परिस्थितियों से सम्बन्धित सही सूचनाओं का संकलन करता है। जैसे स्कूलों का सर्वेक्षण।

शिक्षा में सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः स्कूलों के बारे में तथ्यों का संकलन है जैसे वहां व्यक्तियों को प्राप्त होने वाली सुविधायें, अध्यापकों का औसत वेतन तथा शिक्षक और विद्यार्थियों के अनुपात आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करना। किसी स्कूल के सर्वेक्षण का उद्देश्य स्कूल की परिस्थितियों का मूल्यांकन करना होता है। ऐसे अध्ययनों का उद्देश्य चरों के सम्बन्धों का अध्ययन न होकर विद्यमान दशाओं का अध्ययनहोता है। इस प्रकार का कार्य वैज्ञानिक नहीं होता। यह प्रायः निपुण क्लर्क के कार्य के समान होता है सिवाय इसके कि इसमें विशेष न्यादर्श विधि का प्रयोग किया जाता है। इसी कारण इस विधि को न्यादर्श सर्वेक्षण विधि भी कहते है।

एफ0एन0करलिंगर के अनुसारः–

"सर्वेक्षण अनुसंधान, सामाजिक अनुसंधान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत छोटे और बड़े समग्र से चयन किये गये न्यादर्शो के माध्यम से सापेक्षिक घटनाओं, वितरणों तथा सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।1

इसी परिभाषा के आधार पर यह विधि सर्वेक्षण न्यादर्श कहलाती है। इस दृष्टि से सर्वेक्षण कोई नई विद्या नहीं है।

---

1. Kerlingr (1993), Faundation of behariaurd research, M.V. half, rain heart & western. inc

Scanned with CamScanner

जनसंख्या (समग्र) :–

"समग्र उन समस्त लोगों, वस्तुओं अथवा तथ्यों का समूह है जो किसी परिभाषित व पूर्व निश्चित विशेषताओं के क्षेत्र में आते है।"

जिस सम्पूर्ण समूह से प्रतिदर्श का चयन किया जाता उस सम्पूर्ण समूह को समग्र कहते है अर्थात समग्र हम सम्पूर्ण समूह या जनसंख्या को कहते है, जिसमें सभी इकाइयां या इकाइयों का समूह शामिल है।

प्रो0 काल्विन स्मिथ के अनुसार :–

"एक सांख्यिकी समग्र किसी भी जनसंख्या के गुण प्रकृति अथवा जड़ पदार्थ (जैसे नगर, गांव, घर, समूह या निवास स्थान, फैक्ट्री) का प्रतिदिन उत्पादन या जनमत आदि हो सकता है।"

अतः स्पष्ट है कि केवल व्यक्तियों के समूह को ही समग्र नहीं कहते है अपितु किसी भी गुण, जड़ पदार्थ तथा अचल को यदि वह शोध की विषय वस्तु है तो उसे भी समग्र माना जा सकता है।[1]

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने बांदा जिले के अन्तर्गत आने वाले माध्यमिक विद्यालयों में से 3 माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे कक्षा 10 के छात्र–छात्राओं को अपनी जनसंख्या के रूप में लिया है।

---

1. आइसोडोर चिन द्वारा उद्धृत पारसनाथ राय, (2007) अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पृष्ठ सं0 286

Scanned with CamScanner

न्यादर्श

व्यावहारिक एवं सामाजिक अध्ययनों में प्रायः न्यादर्श द्वारा प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर ही सामान्यीकरण किया जाता है। किसी भी मनोवैज्ञानिक तथ्य अथवा मानवीय व्यवहार के सत्यापन के लिए पूर्ण समग्र (समूह) का अध्ययन असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य होता है। अतः अधिकांश अवस्थाओं में न्यादर्श द्वारा ही काम चलाया जाता है। इस दृष्टि से सामाजिक अध्ययनों के क्षेत्र में न्यादर्श का अधिक महत्व है।

समग्र उन समस्त लोगों, वस्तुओं अथवा तथ्यों का समूह है जो किसी परिभाषित व पूर्व निश्चित विशेषताओं के क्षेत्र में आते है।

"जब समग्र में से कुछ तथ्यों का चयन समग्र के सम्बन्ध में सूचना विशेष प्राप्त करने के लिए करते है, तब तत्वों के इस समूह को न्यादर्श कहते है।"

न्यादर्श के प्रकार

न्यादर्श को दो भागों में बांटा जा सकता है यह दोनों भाग निम्न है:–

1. सम्भाव्य न्यादर्श (Probability Sampling)
2. असम्भाव्य न्यादर्श (Non. Probability Sampling)

1 सम्भाव्य न्यादर्श :–

इस न्यादर्श के भी निम्नलिखित प्रकार है:–

अ– साधारण सम्भाव्य न्यादर्श (Sirnple Random Sampling)

ब– वर्गीय सम्भाव्य न्यादर्श (Starting Random Sampling)

स– क्लस्टर न्यादर्श (Clustar Sampling)

Scanned with CamScanner

2. असम्भाव्य न्यादर्श :–

इस न्यादर्श के भी निम्न प्रकार है:–

अ– अंश न्यादर्शन (Quota Sampling)

ब– सोद्देश्य न्यादर्शन (Purposive Sampling)

स– आकस्मिक न्यादर्शन (Incidental Sampling)

जब जनसंख्या की किसी इकाई को न्यादर्श में सम्मिलित करने के लिए उसका चयन संयोग पर निर्भर करें तो उस चयन विधि को सम्भाव्यता न्यादर्शन कहते है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने साधारण सम्भाव्य न्यादर्श (यादृच्छिक न्यादर्श) का प्रयोग किया है। इस न्यादर्श का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:–

यादृच्छिक न्यादर्श :–

यादृच्छिकी न्यादर्शन प्रक्रिया में समष्टि (जनसंख्या) की इकाइयां क्रमांकित कर ली जाती है। इस प्रकार प्रत्येक इकाई का एक क्रमांक होता है। इकाइयों, को इस प्रकार लिखना ढांचा (Frame) तैयार करना कहलाता है। इस न्यादर्शन में ढांचा तैयार करना ही सबसे कठिन कार्य है। यादृच्छिक न्यादर्शन में इकाइयों को इस प्रकार चुना जाता है कि:–

(1) प्रत्येक इकाई के चुने जाने की सम्भावना (प्रायिकता) समान होती है।

(2) एक इकाई का चुना जाना किसी दूसरी इकाई के चुने जाने की प्रायिकता (सम्भावना) को प्रभावित (कम या अधिक) नहीं करता है।

(3) चुनाव की विधि उस चर से असम्बन्धित होती है जिसके लिए न्यादर्श लिया जा रहा है। उदाहरण के लिए, यदि न्यादर्शन से बुद्धि का अध्ययन करना है तो छात्रों

Scanned with CamScanner

की इकाई का ढांचा निष्पत्ति प्राप्तांकों के आधार पर नहीं बना होना चाहिए, क्योंकि निष्पत्ति एवं बुद्धि सम्बन्धित चर है।

न्यादर्श का चयन :–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने अपने न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया है। शोधार्थी द्वारा बांदा जिला के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालयों में से 3 विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। इनकी कुल संख्या 100 है, जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्रायें है। 50 छात्रों में से 25 ग्रामीण छात्र एवं 25 नगरीय छात्र है इसी प्रकार 50 छात्राओं में से 25 ग्रामीण छात्रायें एवं 25 नगरीय छात्रायें है।

	ग्रामीण	नगरीय	योग
बालक	25	25	50
बालिका	25	25	50
कुल योग	50	50	100

उपकरण

वास्तव में अनुसंधान समस्या से आरम्भ होता है तथा परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का निश्चय होता है। ऐसा नहीं है कि किसी विशेष उपकरण का ही प्रभुत्व हो और जो भी समस्या समक्ष हो, उसमें उसी का प्रयोग करें। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े के लिए उपयुक्त है तथा कभी–कभी तो किसी समस्या के समाधान के लिए आंकड़े एकत्र करने में भी अनेक उपकरणों का प्रयोग करना पड़ जाता है। अतः अनुसंधानकर्ता के लिए आवश्यक है कि उसे उपकरणीय विधियों एवं यन्त्रों का व्यापक ज्ञान हो। उसे यह भी ज्ञात होना चाहिए कि इन उपकरणों से किस प्रकार के

Scanned with CamScanner

आंकड़े प्राप्त होगें, उसकी क्या विशेषताएं एवं सीमाएं है? किन अवधारणाओं पर इनका उपयोग आधारित है तथा उनकी विश्वसनीयता, वैधता एवं वस्तुनिष्ठता क्या है? इसके साथ ही उसमें उपकरणों के बनाने, प्रयोग करने तथा उनसे प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने का कौशल भी होना चाहिए।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता के द्वारा प्रयुक्त उपकरणों में आंकडों के सग्रहण के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इसका संक्षिप्त विवरण निम्नवत् हैः-

1. शैक्षिक उपलब्धि :-

शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित आंकड़ों के लिए शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों से सम्बन्धित छात्रों के कक्षा 9 के प्राप्तांक लिए है।

2. सामाजिक समायोजन :-

इस परीक्षा का निर्माण डा0 आर0सी0 देवा रीडर डेपार्टमेन्ट ऑफ एजूकेशन, अलीगढ़ विश्वविद्यालय अलीगढ़ के द्वारा सन् 1990 में हुआ है।[1] इसका प्रकाशन स्थल नेशनल साइकोलांजिकल कार्पोरेशन 4/230 कचहरी घाट, आगरा है।

इस परीक्षण की वैधता दो पैमानों पर ज्ञात की गयी इसकी वैधता क्रमशः 0.81 और 0.79 प्राप्त हुई है।

Scanned with CamScanner

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां :–

मध्यमान (Mean) $M = \frac{\Sigma X}{N}$ या मध्यमान = $\frac{\text{प्राप्तांकों का योग}}{\text{प्राप्तांकों की संख्या}}$

जहां

M = मध्यमान

Σ = योग

X = दिये हुए प्राप्तांक

N = प्राप्तांकों की संख्या

सहसम्बन्ध (Correlation) $r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \times \Sigma y^2}}$ पीयर्सन विधि से सहसम्बन्ध ज्ञात करने का सूत्र

जहां

r = सहसम्बन्ध गुणांक

Σxy = X और y पदमालाओं के अलग–अलग बिचलनों के गुणनफल का योग

ΣX^2 = X पदमाला के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन के वर्गो का योग

Σy^2 = y पदमाला के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन के वर्गो का योग

---

1. बोगार्डस द्वारा उद्घृत पारसनाथ राय (2007), अनुसंधानपरिचय, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृष्ठ संख्या–236

Scanned with CamScanner

चतुर्थ अध्याय

Scanned with CamScanner

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रथम परिकल्पना का परीक्षण

4.3 द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण

4.4 तृतीय परिकल्पना का परीक्षण

4.5 चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण

4.6 पंचम परिकल्पना का परीक्षण

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इस अध्याय का सम्बन्ध एकीकृत प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं अर्थापन से है। प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ आंकड़ों में निहित तथ्यों को निश्चित करने के लिए शोध उपकरणों द्वारा एकत्रित शोध सामग्री का सारणीयन कर अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में बांदा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया है।

प्रथम तथा द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण :–

प्रथम शोध परिकल्पना के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण बालक–बालिकाओं एवं द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तरीय नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन के आंकड़ों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना गुणनघात विधि से की गई। निष्कर्षो को तालिका संख्या 4.1 में प्रदर्शित किया गया है तथा आंकड़ों को परिशिष्ट में संलग्न किया गया है।

तालिका संख्या 4.1

शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन : आवासीय पृष्ठभूमि

	संख्या (N)	मध्यमान (M)		सहसम्बन्ध गुणांक (r)
ग्रामीण (बालक–बालिकायें)		शैक्षिक उपलब्धि	समायोजन	
	50	626	62	+ 0.31
नगरीय (बालक–बालिकायें)	50	652	73	+ 0.45

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने प्रथम परिकल्पना "माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" का परीक्षण किया। तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट है कि 50 ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन का सहसम्बन्ध गुणांक + 0.31 है अर्थात उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

अतः शोधार्थी द्वारा बनाई गई परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

द्वितीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तरीय नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" का परीक्षण किया गया। तालिका संख्या 4.1 से स्पष्ट है कि 50 नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन का सहसम्बन्ध गुणांक + 0.45 है अतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

Scanned with CamScanner

तृतीय तथा चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण :–

शोध परीक्षण की तृतीय परिकल्पना के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तरीय बालकों एवं चतुर्थ परिकल्पना के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथ उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना, गुणनघात विधि से की गई है। निष्कर्षो को तालिका संख्या 4.2 में प्रदर्शित किया गया है तथा आंकड़ों को परिशिष्ट में संलग्न किया गया है।

तालिका संख्या 4.2

शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन : लैगिंक आधार

	संख्या (N)	मध्यमान (M)		सहसम्बन्ध गुणांक (r)
		शैक्षिक उपलब्धि	समायोजन	
बालक	50	636	69	+ 0.32
बालिकायें	50	642	66	+ 0.45

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने तृतीय परिकल्पना "माध्यमिक स्तरीय बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" का परीक्षण किया। तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट है कि 50 बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन का सहसम्बन्ध गुणांक +0.32 है। अतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक सामाजिक समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

चतुर्थ परिकल्पना "माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" का परीक्षण किया गया। तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट है कि 50 बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन का

Scanned with CamScanner

सहसम्बन्ध गुणांक +0.45 है अतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

पंचम परिकल्पना का परीक्षण :–

पंचम शोध परिकल्पना के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक गुणनघात विधि से ज्ञात किया गया। निष्कर्षो को तालिका संख्या 4.3 में प्रदर्शित किया गया है तथा आंकड़ों को परिशिष्ट में संलग्न किया गया है।

तालिका संख्या 4.3

शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन : सम्पूर्ण बालक–बालिकायें

	संख्या (N)	मध्यमान (M)		सहसम्बन्ध गुणांक (r)
		शैक्षिक उपलब्धि	समायोजन	
बालक	50	636	69	+ 0.32
बालिकायें	50	642	66	+ 0.45
सम्पूर्ण बालक तथा बालिकायें	100	639	68	+ 0.37

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने पंचम परिकल्पना "माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है" का परीक्षण किया। तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट है कि 100 बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन का सहसम्बन्ध गुणांक + 0.37 है। अतः उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

Scanned with CamScanner

पंचम अध्याय

Scanned with CamScanner

5.1 शोध निष्कर्ष

5.2 प्राप्त निष्कर्षों की व्यख्या

5.3 निष्कर्षों की उपादेयता

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

Scanned with CamScanner

विगत चार अध्यायों में सम्प्रत्यय, साहित्य, सर्वेक्षण, शोध विधि व प्रक्रिया एवं प्रारूपों की व्याख्या तथा आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण तथा अर्थापन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के पंचम अध्याय में आंकड़ों के निष्कर्षो उनकी उपदेयता एवं भावी शोध हेतु सुझावों की सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है :–

***निष्कर्ष* : 1**

माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

***निष्कर्ष* : 2**

माध्यमिक स्तरीय नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

***निष्कर्ष* : 3**

माध्यमिक स्तरीय बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

***निष्कर्ष* : 4**

माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

***निष्कर्ष* : 5**

माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

Scanned with CamScanner

निष्कर्षों की व्याख्या :–

प्रथम परिकल्पना के परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त (माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है) हुआ। चूंकि ग्रामीण वातावरण शिक्षा के अनुकूल नहीं है तथा लोगों में जागरूकता की कमी है उचित निर्देशनएवं शिक्षा के अभाव के कारण शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। दूसरा कारण यह भी है कि ग्रामीण विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों तथा संसाधनों की कमी है अतः इससे भी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। जबकि सामाजिक समायोजन भी इन्हीं करणों से प्रभावित होता है जैसे–पारिवारिक कारण, विद्यालयी वातावरण तथा सामाजिक वातावरण अतः शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है, यह संभव हो सकता है।

द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तरीय नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है। प्रथम परिकल्पना से प्राप्त निष्कर्ष से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि नगरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध, ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की अपेक्षा उच्च है। यह उचित प्रतीत होता है क्योंकि नगरों में शिक्षा का स्तर, गुणवत्ता निर्देशन आदि की सुविधायें गांवों की अपेक्षा अधिक अच्छी है। नगरीय परिवारो के रहन–सहन तथा गांवों के अपेक्षा उच्च गुणवत्तापूर्ण जीवन अवसरों की उपलब्धता आदि के कारण यह सम्भव हो सकता है।

Scanned with CamScanner

तृतीय परिकल्पना के परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त (माध्यमिक स्तरीय बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है) हुआ। चूंकि प्रस्तुत अध्ययन मे सम्मिलित बालक–बालिकायें किशोरवस्था के है तथा किशोरवस्था में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर पहुंचने लगता है। मानसिक विकास तथा शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन परस्पर सहसम्बन्धित होते है। मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारणों में वैयक्तिक विभेद के अलावा निम्नतर स्थित के होते है। अतः यह निष्कर्ष उचित प्रतीत होता है।

चतुर्थ परिकल्पना के परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है। तृतीय परिकल्पना से प्राप्त निष्कर्ष से तुलना करने पर यह स्पष्ट है कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध बालकों की अपेक्षा उच्च है। इसके लिये भी पूर्वोक्त कारण ही उत्तरदायी हो सकते है। अतः यह निष्कर्ष उचित प्रतीत होता है।

पंचम परिकल्पना के परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त (माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है) हुआ। शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन यदि पूर्ण धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित होते है तो यह निष्कर्ष निष्फलता कि जिन बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होगी उनका समायोजन भी उच्च स्तर का होगा जबकि कम शैक्षिक उपलब्धि के बालक बालिकाओं का समायोजन भी निम्न स्तरका होगा। लेकिन प्रस्तुत अध्ययन में पंचम परिकल्पना के परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष निकला कि शैक्षिक

Scanned with CamScanner

उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन एक दूसरे को प्रभावित तो करते है किन्तु पूर्ण रूप से नहीं।

निष्कर्षो की उपादेयता :–

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तरीय बालक बालिकाओ पर किया गया है चूंकि इस स्तर के बालक–बालिकायें किशोरावस्था के होते है। किशोरावस्था में किशोर एवं किशोरियों का सामाजिक परिवेश अत्यंत विस्तृत हो जाता है। किशोरावस्था में होने वाले अनुभवों तथा बदलते सामाजिक सम्बन्धों के फलस्वरूप किशोर–किशोरियां नए ढंग से सामाजिक वातावरण में समायोजन करने का प्रयास करते है। अतः इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो की उपादेयता का महत्व और भी बढ़ जाता है। क्योकि समायोजन व्यक्ति अपनी क्षमता, योग्यता के अनुसार करता है। एक सुसमायोजित व्यक्ति ही जीवन को अच्छे ढंग से जीता है। परिवार के सदस्यों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह बालक को एक सुसमायोजित व्यक्ति बनने में सहायता करें। बालक–बालिकाओं की विभिन्न समस्याओं का समाधान मनोवैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए। विद्यालय प्रशासन व अध्यापकों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि बालक बालिकाओं को प्रोत्साहन तथा स्नेह प्रदान करें।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. यह अध्ययन विस्तृत स्तर पर बडे प्रतिदर्श पर किया जा सकता है।
2. बालक–बालिकाओं में अनेक प्रकार के समायोजन का अध्ययन किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

3. माध्यमिक स्तरीय बालक बालिकाओं की शैक्षिक रूचि व सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4. मानसिक रूप से विकलांग बालकों एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व सामाजिक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता है।

5. माध्यमिक स्तरीय बालक–बालिकाओं के माता–पिता का उनके सामाजिक समायोजन में योगदान पर अध्ययन किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

परिशिष्ट

Scanned with CamScanner

(क)

तालिका संख्या–1

ग्रामीण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणनाः–

X शै0उ0के आंकडे	Y सा0स0 के आकडे	x	y	x^2	y^2	xy
561	74	-65	+12	4225	144	-780
608	71	-18	+9	324	81	-162
500	44	-126	-18	15876	324	-2268
664	31	+38	-31	1444	961	-1178
621	62	-5	0	25	0	0
692	60	+66	-2	4356	4	-132
447	64	-179	+2	32041	4	-358
612	46	-14	-16	196	256	+224
615	53	-11	-9	121	81	+99
608	25	-18	-37	324	1369	+666
692	73	+66	+11	4356	121	+726
619	64	-7	+2	49	4	-14
629	63	+3	+1	9	1	+3
639	28	+13	-34	169	1156	-442
492	62	-134	0	17956	0	0
561	80	-65	+18	4225	324	-1170
602	71	-24	+9	576	81	-216
722	76	+96	+14	9216	196	+1344
728	78	+102	+16	10404	256	+1632
605	72	-21	+10	441	100	-210
592	82	-34	+20	1156	400	-680
759	84	+133	+22	17689	484	+2926
768	70	+142	+8	20164	64	+1136
804	92	+178	+30	31684	900	+5340
622	75	-4	+13	16	169	-52
588	55	-38	-7	1444	49	+266
720	42	+94	-20	8836	400	-1880
532	48	-94	-14	8836	196	+1316
512	52	-114	-10	12996	100	+1140
598	60	-28	-2	784	4	+56
739	43	+111	-19	12321	361	-2109
607	63	-19	+1	361	1	-19
708	76	+82	+14	6724	196	+1148
650	74	+24	+12	576	144	+288
618	66	-8	+4	64	16	-32

Scanned with CamScanner

568	51	-58	-11	3364	121	+638
528	50	-98	-12	9604	144	+1176
576	40	-50	-22	2500	484	+1100
538	35	-88	-27	7744	729	+2376
690	82	+64	+20	4096	400	+1280
615	76	-11	+14	121	196	-154
540	62	-86	0	7396	0	0
644	68	+18	+6	324	36	+108
594	65	-32	+3	4224	9	-96
540	61	-86	-1	7396	1	+86
648	66	+22	+4	484	16	+88
614	72	-12	+10	144	100	-120
638	70	+12	+8	144	64	+96
825	68	+199	+6	39601	36	+1194
712	62	+86	0	7396	0	0
M= 626	M=62			x^2=324522	y^2=11283	xy=18916

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \times \Sigma y^2}}$$

$$r = \frac{18916}{\sqrt{324522 \times 11283}}$$

$$r = \frac{18916}{\sqrt{3661581726}}$$

$$r = \frac{18916}{60511.005}$$

$$r = 0.31260429$$

$$\boxed{r = +0.31}$$

Scanned with CamScanner

तालिका संख्या–2

नगरीय बालक–बालिकाओ की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना:–

X शै0उ0के आंकडे	Y सा0स0 के आकडे	x	y	x^2	y^2	xy
704	83	+52	+10	2704	100	+510
692	78	+40	+5	1600	25	+200
656	74	+4	+1	16	1	+4
648	72	-4	-1	16	1	+4
668	76	+16	+3	256	9	+48
540	69	-112	-4	12544	16	+448
600	73	-52	0	2704	0	0
711	79	+59	+6	3481	36	+354
603	85	-49	+12	2401	144	-588
588	76	-64	+3	4096	9	-192
641	77	-11	+4	121	16	-44
598	72	-54	-1	29916	1	+54
599	70	-53	-3	2809	9	+159
695	78	+43	+5	1849	25	+215
532	68	-120	-5	14400	25	+600
722	81	+70	+8	4900	64	+560
514	70	-138	-3	19044	9	+414
621	71	-31	-2	961	4	+62
649	65	-3	-8	9	64	+24
676	68	+24	-5	576	25	-120
725	84	+73	+11	5329	121	+803
700	75	+48	+2	2304	4	+96
593	63	-59	-10	3481	100	+590
805	74	+153	+1	2309	1	+153
582	72	-70	-1	4900	1	+70
620	70	-32	-3	1024	9	+96
544	66	-108	-7	11334	49	+756
599	65	-53	-8	2809	64	+424
548	62	-104	-11	10816	121	+1144
688	78	+36	+5	1296	25	+180
612	58	-40	-15	1600	225	+600
722	68	+70	-5	4900	25	-350
704	61	+52	-12	2704	144	-624
709	79	+57	+6	3249	36	+342
644	72	-8	-1	16	1	+8

Scanned with CamScanner

644	72	-8	-1	16	1	+8
698	86	+46	+13	2116	169	+598
732	76	+80	+3	6400	9	+240
649	73	-3	0	9	0	0
601	74	-51	+1	2601	1	-51
605	76	-47	+3	2209	9	-141
712	77	+60	+4	3600	16	+240
714	68	+62	-5	3844	25	-310
807	79	+155	+6	24025	36	+930
722	62	+70	-11	4900	121	-770
681	72	+29	-1	841	1	-29
603	63	-49	-10	2401	100	+490
594	66	-58	-7	3364	49	+406
613	78	-39	+5	1521	25	-195
705	82	+53	+9	2809	81	+447
725	84	+73	+11	5329	121	+803
M=652	M=73			X^2=201253	y^2=2272	xy=9688

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \times \Sigma y^2}}$$

$$r = \frac{9688}{\sqrt{201253 \times 2272}}$$

$$r = \frac{9688}{\sqrt{457246816}}$$

$$r = \frac{9688}{21383.3303}$$

$$r = 0.4530635$$

$$\boxed{r = +0.45}$$

Scanned with CamScanner

तालिका संख्या–3

बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना :–

X शै0उ0के आंकडे	Y सा0स0 के आकडे	x	y	x^2	y^2	xy
561	74	-75	+5	5625	25	-375
608	71	-28	+2	784	4	-56
500	44	-136	-25	18496	625	+3400
664	31	+28	-38	784	1444	-1604
621	62	-15	-7	225	49	+105
692	60	+56	-9	3136	81	-504
447	64	-189	-5	35721	25	+945
612	46	-24	-23	576	529	+552
615	53	-21	-16	441	256	+336
608	25	-28	-44	784	1936	+1232
692	73	+56	+4	3136	16	+224
619	64	-17	-5	289	25	+85
629	63	-7	-6	49	36	+42
639	28	+3	-41	9	1681	-123
492	62	-144	-7	20736	49	+1008
561	80	-75	+11	5625	121	-825
602	71	-34	+2	1156	4	-68
722	76	+86	+7	7396	49	+602
728	78	+92	+9	8464	81	+828
605	72	-31	+3	961	9	-93
592	82	-44	+13	1936	169	-572
759	84	+123	+15	15129	225	+1845
768	70	+132	+1	17424	1	+132
804	92	+168	+23	28224	529	+3864
622	75	-14	+6	196	36	-84
704	83	+68	+14	4624	196	+952
692	78	+56	+9	3136	81	+504
656	74	+20	+5	400	25	+100
648	72	+12	+3	144	9	+36
668	76	+32	+7	1024	49	+224
540	69	-96	0	9216	0	0
600	73	-36	+4	1296	16	-144
711	79	+75	+10	5625	100	+750
603	85	-33	+16	1089	256	-528
588	76	-48	+7	2304	49	-336

Scanned with CamScanner

641	77	+5	+8	25	64	+40
598	72	-38	+3	1444	9	-114
599	70	-37	+1	1369	1	-37
695	78	-59	+9	3481	81	+531
532	68	-104	-1	10816	1	+104
722	81	+64	+12	7396	144	+1032
514	70	-122	+1	14884	1	-122
621	71	-15	+2	225	4	-30
649	65	+13	-4	169	16	-52
676	68	+40	-1	1600	1	-40
725	84	+89	+15	7921	225	-1335
700	75	+64	+6	4096	36	+384
593	63	-43	-6	1849	35	+258
805	74	+189	+5	28561	25	+845
582	72	-54	+3	2916	9	-162
M=636	M = 69			X^2=292912	y^2=9639	xy=16966

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \times \Sigma y^2}}$$

$$r = \frac{16966}{\sqrt{292912X9639}}$$

$$r = \frac{16966}{\sqrt{2823378768}}$$

$$r = \frac{16966}{53135.4756}$$

$$r = 0.31929704$$

$$\boxed{r = +0.32}$$

Scanned with CamScanner

तालिका संख्या–4

बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध

गुणांक की गणना :–

X शै0उ0के आंकडे	Y सा0स0 के आकडे	x	y	x^2	y^2	xy
588	55	-54	-11	2916	121	+594
720	42	+78	-24	6084	576	-1872
535	48	-110	-18	12100	324	+1980
512	52	-130	-14	16900	196	+1820
598	60	-44	-6	1936	36	+264
737	43	+95	-23	9025	529	-2185
607	63	-35	-3	1225	9	+105
708	76	+66	+10	4356	100	+660
650	74	+8	+8	64	64	+66
618	66	-24	0	576	0	0
568	51	-74	-15	5476	225	+1110
528	50	-114	-16	12996	256	+1824
576	40	-66	-26	4356	676	+1716
538	35	-107	-31	10816	961	+3224
690	82	+48	+16	2304	256	+768
615	76	-27	+10	729	100	-270
540	62	-102	-4	10404	16	+408
644	68	+2	+2	4	4	+4
594	65	-48	-3	2304	9	+144
540	61	-102	-5	10404	25	+510
668	66	+6	0	36	0	0
614	72	-28	+6	784	36	-168
638	70	-4	+4	16	16	-16
825	68	+183	+2	33489	4	+366
712	62	+70	-4	4900	16	-280
620	70	-22	+4	484	16	-88
544	66	-98	0	9604	0	0
599	65	-43	-1	1849	1	+43
548	62	-94	-4	8836	16	+376
688	78	+46	+12	2116	144	+552
612	58	-30	-8	900	64	+240
722	68	+80	+2	6400	4	+160
704	61	+62	-5	3844	25	-310
709	79	+67	+13	4489	169	+871
644	72	+2	+6	4	36	+12

Scanned with CamScanner

698	86	+56	+20	3136	400	+1120
732	76	+90	+10	8100	100	+900
649	73	+7	+7	49	49	+49
601	74	-41	+8	1681	64	-328
605	76	-37	+10	1369	100	-370
712	77	+70	+11	4900	121	+770
714	68	+72	+2	5184	4	+144
807	79	+165	+13	27225	169	+2145
722	62	+80	-4	6400	16	-320
681	72	+39	+6	1521	36	+234
603	63	-39	-3	1521	9	+117
594	66	-48	0	2304	0	0
613	78	+29	+12	841	144	-348
705	82	+63	+16	3969	256	+1008
725	84	+83	+18	6889	324	+1494
M=642	M=66			X^2=267815	y^2=6822	xy=19241

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \times \Sigma y^2}}$$

$$r = \frac{19241}{\sqrt{267815X6822}}$$

$$r = \frac{19241}{\sqrt{1827033930}}$$

$$r = \frac{19241}{42743.8174}$$

$$r = 0.45014697$$

$$\boxed{r = +0.45}$$

Scanned with CamScanner

तालिका संख्या–5

सम्पूर्ण बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक की गणना :–

X शै0उ0के आंकडे	Y सा0स0 के आकडे	x	y	x^2	y^2	xy
561	74	-78	+6	6084	36	-468
608	71	-31	+3	961	9	-93
500	44	-139	-24	19321	576	+3336
664	31	+25	-37	625	1369	-925
621	62	-18	-6	324	36	+108
692	60	+53	-8	2809	64	-424
447	64	-192	-4	36864	16	+768
612	46	-27	-22	729	484	+594
615	53	-24	-15	576	225	+360
608	25	-31	-43	961	1849	1333
692	73	+53	+5	2809	25	+265
619	64	-20	-4	400	16	+80
629	63	-10	-5	100	25	+50
639	28	0	-40	0	1600	0
492	62	-147	-6	21609	36	+882
561	80	-78	+12	6084	144	-936
602	71	-37	+3	1369	9	-111
722	76	+83	+8	6989	64	+664
728	78	+89	+10	7921	100	+890
605	72	-34	+4	1156	16	-136
592	82	-47	+14	2209	196	-658
759	84	+120	+16	14400	256	+1920
768	70	+129	+2	16641	4	+258
804	92	+165	+24	27225	576	+3960
622	75	-17	+7	289	49	-119
588	55	+51	-13	2601	169	+663
720	42	+81	-26	6561	676	-2106
532	48	-107	-20	11449	400	+2140
512	52	-127	-16	16129	256	+2032
598	60	-41	-8	1681	64	+328
737	43	+98	-25	9604	625	-2450
607	63	-32	-5	1024	25	+160
708	76	+69	+8	7461	64	+552
650	74	+11	+6	121	36	+66
618	66	-21	-2	441	4	+42
568	51	-71	-17	5041	289	+1207

Scanned with CamScanner

528	50	-111	-18	12321	324	+1998
576	40	-63	-28	3369	784	+1764
538	35	-101	-33	10201	1089	+3333
690	82	+51	+14	2601	196	+714
615	76	-24	+8	576	64	-192
540	62	-99	-6	9801	36	+594
644	68	+5	0	25	0	0
594	65	-45	-3	2025	9	+135
540	61	-99	-7	9801	49	+693
648	66	+9	-2	81	4	-18
614	72	-25	+4	625	16	-100
638	70	-1	+2	1	4	-2
825	68	+186	0	34596	0	0
712	62	+73	-6	5329	36	-438
704	83	+65	+15	4225	225	+975
692	78	+53	+10	2809	100	+530
656	74	+17	+6	289	36	+102
648	72	+9	+4	81	16	+36
668	76	+29	+8	841	64	+232
540	69	-99	+1	9801	1	-99
600	73	-39	+5	1521	25	-195
711	79	+72	+11	5184	121	+792
603	85	-36	+17	1296	289	-612
588	76	-51	+8	2601	64	-408
641	77	+2	+9	4	81	+18
598	72	-41	+4	1681	16	-164
599	70	-40	+2	1600	4	-80
695	78	+56	+10	3136	100	+560
532	68	-107	0	11449	0	0
722	81	+83	+13	6889	169	+1079
514	70	-125	+2	15625	4	-250
621	71	-18	+3	324	9	-54
649	65	+10	-3	100	9	-30
676	68	+37	0	1369	0	0
725	84	+86	+16	7396	256	+1376
700	75	+61	+7	3721	49	+427
593	63	-46	-5	2116	25	+230
805	74	+166	+6	27556	36	+996
582	72	-57	+4	3249	16	-228
620	70	-19	+2	361	4	-38
544	66	-95	-2	9025	4	+190
599	65	-40	-3	1600	9	+120

Scanned with CamScanner

548	62	-91	-6	8281	36	+546
688	78	+49	+10	2401	100	+490
612	58	-27	-10	729	100	+270
722	68	+83	0	6889	0	0
704	61	+65	-7	4225	49	-455
709	79	+70	+11	4900	121	+770
644	72	+5	+4	25	16	+20
698	86	+59	+18	3481	324	+1062
732	76	+93	+8	8649	64	+744
649	73	+10	+5	100	25	+50
601	74	-38	+6	1444	36	-228
605	76	-34	+8	1156	64	-272
712	77	+73	+9	5329	81	+657
714	68	+75	0	5625	0	0
807	79	+168	+11	28224	121	+1848
722	62	+83	-6	6889	36	-498
681	72	+42	+4	1764	16	+168
603	63	-36	-5	1296	25	+180
594	66	-45	-2	2025	4	+90
613	78	-26	+10	676	100	-260
705	82	+66	+14	4356	196	+924
725	84	+86	+16	7396	256	+1376
M=639	M=68			X^2=561421	y^2=16523	xy=35610

$$r = \frac{\Sigma xy}{\sqrt{\Sigma x^2 \times \Sigma y^2}}$$

$$r = \frac{35610}{\sqrt{561421X16523}}$$

$$r = \frac{35610}{\sqrt{9276359183}}$$

$$r = \frac{35610}{96313.8577}$$

$$r = 0.36972873$$

$$\boxed{r = +0.37}$$

Scanned with CamScanner

(ख)

सामाजिक समायोजन मापनी

निर्देश :–

शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन के लिये व्यक्तित्व पसन्द तथा आदतों की जानकारी आवश्यक है। ऐसा देखा गया है कि प्रतिभाशाली व्यक्तियों में भी ऐसी व्यक्तित्व सम्बन्धी कठिनाइयाँ होती है जो उनकी प्रतिभा के विकास में बाधक हैं। इनकी जानकारी प्राप्त होने पर उन्हें उपयुक्त सलाह दी जा सकती है जिससे वे और अधिक उन्नति कर सकें। इस प्रश्नावली में ऐसी जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ प्रश्न है। अतः इन प्रश्नों का सही और सोच–समझकर उत्तर देना आपके हित में है।

ये प्रश्न बहुत सरल है। प्रत्येक प्रश्न के सामने 'Yes' तथा 'No' के नीचे खाने (☐ बने हैं, प्रश्न पढिये यदि आपको अपना उत्तर 'Yes' में देना है तो 'Yes' के नीचे खाने पर क्रास (X तथा यदि आपका उत्तर 'No' में है तो 'No' के नीचे खाने पर क्रास (X) लगावें।

उदाहरण :–

		'Yes'	'No'
1.	क्या आपको स्वादिष्ट भोजन पसन्द है?	☒	☐
2.	क्या आप गन्दे कपड़े पहनना पसन्द करते हैं?	☐	☒

यह अनुमान लगाते हुए कि प्रथम प्रश्न के लिए आपका उत्तर 'Yes' है हमनें उदाहरण प्रश्न संख्या 1 के सामने 'Yes' के नीचे वाले खाने (☐ पर क्रास (X) लगा दिया है। उसी प्रमार यह अनुमान लगाते हुए कि प्रश्न संख्या 2 के लिस आपका उत्तर 'No' के नीचे वाले खाने पर क्रास (X) लगाया।

आपके उत्तर पूर्ण रूप से गुप्त रखे जायेगें। अतः आप उत्तर निःसंकोच भाव से दें। इस प्रश्नावली का कोई समय निश्चित नहीं है किन्तु उत्तर शीध्रता से दीजिए।

अब आप पृष्ठ उलटिये व प्रश्नों के उत्तर देना प्रारम्भ कीजिए।

Scanned with CamScanner

1. क्य आप कभी चोट लगने पर रोये हैं?
2. क्या आपने कभी झूठ बोला है?
3. क्या आपको कुत्ता, बिल्ली आदि जानवर पालना पसन्द है?
4. क्या आपको छोटे बच्चे पसन्द हैं?
5. क्या आपको शीघ्र गुस्सा आ जाता है?
6. क्या आप लड़ाई में शीघ्र मारपीट पर आ जाते हैं?
7. क्या आप यह अनुभव करते है कि आपको कोई प्यार नहीं करता?
8. क्या आपने कभी अपने हिस्से से अधिक लिया हैं?
9. क्या दूसरे व्यक्ति को चोट लगने पर आप कभी रोये हैं?
10. क्या आप शिकार खेलना पसन्द करते हैं?
11. क्या आप अकारण ही दुःखी से सुखी अथवा सुखी से दुःखी हो जाते हैं?
12. क्या दूसरे व्यक्ति आपको प्रायः ही दुःखी करते हैं?
13. क्या आप क्रोध में अक्सर आपे से बाहर होते हैं?
14. क्या आप अक्सर अपने स्कूल/कार्य पर देरी से पहुंचते हैं?
15. क्या आप सदैव प्रसन्न रहते हैं?
16. क्या आप प्रायः स्वस्थ अनुभव करते हैं?
17. क्या आप अक्सर घर से भाग जाने का विचार करते हैं?
18. क्या आप अक्सर काम को टाल जाते हैं?
19. क्या आप दस वर्षो के बाद पांच लाख रूपये की अपेक्षा तुरन्त एक कार लेना पसन्द करेगें?

Scanned with CamScanner

20. क्या आप कम वेतन परन्तु काफी तरक्की के व्यवसाय की अपेक्षा अधिक वेतन परन्तु कम तरक्की का व्यवासय पसन्द करेगें?

21. क्या नुकसान होने पर भी आप सदैव मुस्कराते हैं?

22. क्या आप सिनेमा देखकर कभी रोये हैं?

23. क्या आप किसी को सुखी देखकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं?

24. क्या आप परिचितों के बीच घबराहट अनुभव करते हैं?

25. क्या आप बहुत से व्यक्तियों से घृणा करते हैं?

26. क्या आपने कभी कोई बात अनसुनी करने का बहाना किया हैं?

27. क्या आपने कभी दूसरे की चीज को तोड़ी अथवा खोई हैं?

28. क्या आप ऐसे व्यक्ति से विवाह करना पसन्द करेगें जिससे आपको प्रेम नहीं है, परन्तु वह बहुत धनी हैं?

29. क्या आप लोगों का तब तक मजाक उड़ाते है, जब तक वे रो न पडें?

30. क्या आपके परिवार वालों ने आपके साथ सदैव ठीक व्यवाहार किया हैं?

31. क्या आपका कोई विश्वसनीय दोस्त है?

32. क्या लोग आपको सनकी समझते हैं?

33. क्या आप जेब खर्च मिलने पर शीध्र ही खर्च कर देते हैं?

34. क्या आप मनोरंजन पसन्द करते हैं?

35. क्या आपने जीवन का कोई उद्देश्य निश्चित किया हैं?

36. क्या आप कार्य से शीध्र उकता जाते हैं?

37. क्या आप इरादा करने के बाद उसे अक्सर निभाने में सफल हो जाते हैं?

Scanned with CamScanner

38. क्या आपका मन इतना भटकता है कि आप अपना कार्य भूल जाते हैं?

39. क्या आप पांच सौ रूपये प्रतिमास की अपेक्षा दस रूपये प्रतिदिन का वेतन पसन्द करेगें?

40. यदि परीक्षा में नकल करना अनुचित न माना जाय तो क्या आप नकल करके पास होना पसन्द करेगें?

41. क्या आपने कभी बदला लेने का विचार किया है?

42. क्या आपने कभी विद्वान होने का दिखावा किया है?

43. क्या आप शीध्र ही मित्र बना लेते है?

44. क्या आप वास्तविक मित्रता की अपेक्षा पांच हजार रूपये अधिक पसन्द करेगें?

45. क्या आपको ऐसा लगता है कि अक्सर लोग आपका मजाक उड़ाते हैं?

46. क्या बहुत से लोगों के बीच भी आप अकेलेपन का अनुभव करते हैं?

47. क्या प्रायः जिस वस्तु को पसन्द करते हैं उसी से अकस्मात घृणा करने लगते हैं?

48. क्या आपने कभी चोरी की हैं, वह चाहे पिन अथव बटन जैसी छोटी वस्तु हो?

49. क्या आप मनोरंजन के लिऐ किसी जन्तु को परेशान करना पसन्द करते हैं?

50. क्या आप किसी व्यक्ति को फांसी लगते हुये देखना पसन्द करते हैं?

51. क्या आप अक्सर लोगों पर सन्देह करते हैं?

52. क्या आप अक्सर ऐसा अनुभव करते हैं कि लोग आपके दुश्मन हैं?

53. क्या आपको ऐसा लगता है कि कोई रहस्यपूर्ण शक्ति आपसे आपकी इच्छा के विरूद्ध काम करवा रही हैं?

54. क्या आपमें ऐसी अनेक आदतें है जिन्हें आप तोड़ना चाहते हैं?

Scanned with CamScanner

55. क्या आप बहुधा असन्तुष्ट और बेचैन रहते हैं?

56. क्या आप कार्य की पहले योजना बना लेते हैं?

57. क्या आप प्रायः सुस्ती से कार्य करते हैं?

58. क्या आप एक कार्य पर अधिक देर तक नहीं लग पाते हैं?

59. क्या आप कठिन परिश्रम वाले किन्तु रूचिपूर्ण व्यवसाय की अपेक्षा कम परिश्रम के किन्तु अरूचिपूर्ण व्यवसाय को पसन्द करेंगें?

60. क्या आप किसी कार्य को करने की योजना पांच या दस वर्ष पूर्व ही बना लेते है?

61. क्या मिठाई देखकर कभी अपके मुंह में पानी आया हैं?

62. क्या आप कहानी पढ़कर/सुनकर कभी रोये हैं?

63. क्या आप दूसरों को दुःखी देखकर स्वयं भी दुःखी हो जाते हैं?

64. क्या आप दुःखी देखकर यह अनुभव करते है कि आप कितने सुखी हैं?

65. क्या आप अपने दोस्तों से शीध्र उकता जाते है?

66. क्या आप ऐसा अनुभव करते है कि और लोगों से आप बहुत भिन्न हैं?

67. क्या आप अपना कार्य सदैव समय पर कर लेते हैं?

68. क्या आपने किसी की पीठ पीछे बुराई की हैं?

69. क्या आप कभी–कभी किसी व्यक्ति या जन्तु को चोट लगने पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं?

70. क्या आप लोगों से मिलने पर उनसे प्रायः रूचि लेने लगते हैं?

71. क्या बहुत से लोग आपसे मित्रता करना पसन्द करते हैं?

72. क्या अक्सर लोग आपको पसन्द नही करते हैं?

Scanned with CamScanner

73. क्या आप अपने कार्य को टालते रहते हैं और अन्त में अत्यधिक मेहनत करके उसे पूरा करते हैं?

74. क्या आपको अक्सर ऐसा लगता है कि जीवन जीने योग्य नहीं हैं?

75. क्या आप प्रायः अपना उद्देश्य पूर्ण न होने पर भी सन्तुष्ट रहते हैं?

76. क्या आप महत्वपूर्ण किन्तु सामान्य वेतन के व्यवसाय पसन्द करेगें?

77. क्या आप कार्य करने का इरादा करने के बाद प्रायः ऐसा अनुभव करते हैं कि वह आपके वश का नहीं हैं?

78. क्या आप अक्सर इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि शान्त रहना मुश्किल हो जाता है?

79. कोई कार्य करने का निश्चय करने के बाद क्या आप प्रायः विचार बदल देते हैं?

80. क्या आप इस समयएक सुन्दर कार की अपेक्षा एक वर्ष बाद दस लाख रूपया लेना पसंद करेगें?

81. क्या आपने सदैव प्रसन्नता से आज्ञा पालन किया है?

82. क्या आपने कभी किसी व्यक्ति की शिकायत की हैं?

83. क्या आप अपने शत्रु को गहरी चोट लगने पर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं?

84. क्या आप जानवरों का भयानक युद्ध देखना पसन्द करेगें?

85. क्या आपके माता–पिता/अभिभावक आपसे जरूरत से ज्यादा आशा करते हैं?

86. क्या लोगो का व्यवहार आपके प्रति न्यायपूर्ण हैं?

87. क्या आप सड़क से टूटा शीशा इत्यादि हटा देते है ताकि दूसरों को चोट न लगे?

88. क्या आप प्रायः लोगों की सहायता कर देते हैं?

Scanned with CamScanner

89. क्या आपको मित्रता करने में काफी समय लगता हैं?

90. क्या आप किसी को उचित दण्ड मिलने पर भी दुःखी होते हैं?

91. क्या आपको ऐसा लगता है कि संसार में आपका कोई नहीं है।

92. क्या लोग आवश्यकता से अधिक आपमें गलती निकालते हैं?

93. क्या आप अक्सर व्यर्थ के विचारों से छुटकारा पाने के लिए बेचैन हो जाते हैं?

94. क्या आप अक्सर बिना सोचे समझे कार्य में जुट जाते हैं?

95. क्या आप अक्सर दुःखी रहते हैं?

96. क्या आप बहुत से कार्य अपूर्ण छोड़ देते हैं?

97. क्या आप अपने कार्य की अपेक्षा अधिक रूचि लेते हैं?

98. क्या आप अक्सर अपनी योजनायें पूरी कर लेते हैं?

99. क्या आप तुरन्त पांच वर्ष के कारावास की अपेक्षा दस वर्ष का कारावास पसन्द करेगें।

100. क्या आप प्रायः बिना योजना बनाये कार्य प्रारम्भ कर देते हैं?

Scanned with CamScanner

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अस्थाना, विपिन एवं अन्य (2008–09) : शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यकी, आगरा, ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, कुल पृष्ठ संख्या–722

कपिल, एच0के0 (2003) : "अनुसंधान विधियां (व्यवहारिक विज्ञानों में), आगरा हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, कुल पृष्ठ संख्या–210

गुप्ता अल्का (2008) : व्यवहारपरक विज्ञानों में सांख्यकीय विधियां, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, पृष्ठ संख्या– 670

गुप्ता एस0पी0 (2008) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन कुल पृष्ठ संख्या– 547

गुप्ता एस0पी0 (2008) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, कुल पृष्ठ संख्या– 569

त्यागी, गुरूदास (2007) : शिक्षा में मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर, कुल पृष्ठ संख्या – 415

पाठक, पी0डी0 (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर कुल पृष्ठ संख्या– 561

भटनागर, ए0बी0 (2005) : मापन एवं मूल्यांकन, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो, कुल पृष्ठ संख्या–560

राय, पारसनाथ (2008) : अनुसंधान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, संजय प्लेस, कुल पृष्ठ संख्या– 383

Scanned with CamScanner

सिंह, अरूण कुमार (2008) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षा में शोध विधियां दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, कुल पृष्ठ संख्या– 605

सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप (2003) : शिक्षा के दार्शनिक एव समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ, सूर्य पब्लिकेशन, कुल पृष्ठ संख्या– 943

सरस्वत, मालती (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, इलाहाबाद, आलोक प्रकाशन, कुल पृष्ठ संख्या– 643

Saxena, N.R. (2004) : Fundamental of Educational research, Meerut, R.Lal Book Depo, P.P. 554

Srivastva, D.S. (2006) : Education psychology, Agra. Shri Publishers and Distributors P.P. 190

Welton, J. (2004) : Psychology of Educaation, Delhi, Sangeeta Publiction, P.P. 190

Scanned with CamScanner